



वर्ष-28 अंक : 145 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टनम, तिरुपति से प्रकाशित) श्रावण कृ.11 2080 शनिवार, 12 अगस्त 2023



Ghar Ka Doctor **सर दर्द से तुरंत राहत**

MY Dr. Headache Roll On **BUY NOW AT '35/-**

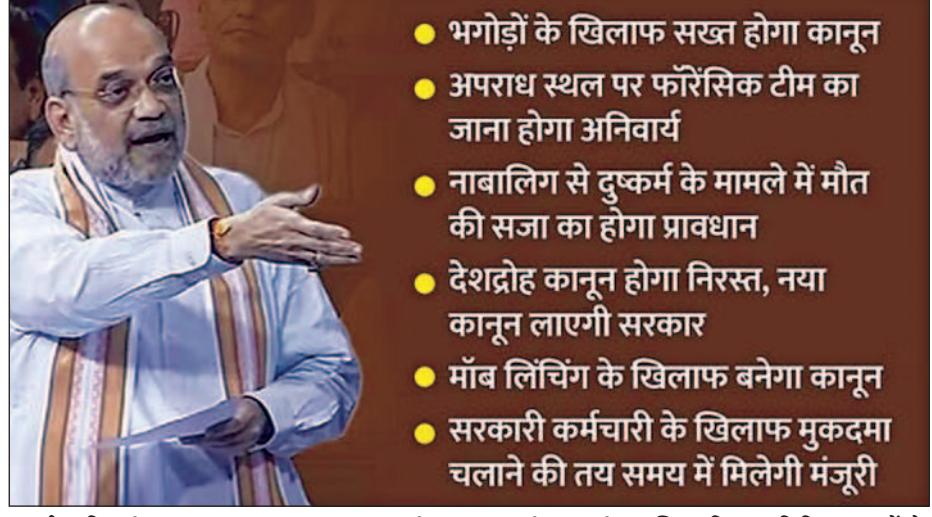
HEADACHE GONE WITH MY DR ROLL ON **100% आयुर्वेदिक**

For Trade Enquiry : 8919799808 www.mydrpainrelief.com

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

आईपीसी-सीआरपीसी और एविडेंस एक्ट बदला जाएगा

लोकसभा में बिल पेश किया गया

शाह बोले-इनका मकसद न्याय नहीं सजा देना था

- भगोड़ों के खिलाफ सख्त होगा कानून
- अपराध स्थल पर फॉरेंसिक टीम का जाना होगा अनिवार्य
- नावलिंग से दुष्कर्म के मामले में मौत की सजा का होगा प्रावधान
- देशद्रोह कानून होगा निरस्त, नया कानून लाएगी सरकार
- मॉब लिंचिंग के खिलाफ बनेगा कानून
- सरकारी कर्मचारी के खिलाफ मुकदमा चलाने की तय समय में मिलेगी मंजूरी

नई दिल्ली, 11 अगस्त (एजेंसियां)। लोकसभा में शुक्रवार को 3 बजे बिल- भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और भारतीय सांस्कृतिक विवरण 2023 पेश किए गए। ये बिल अंग्रेजों के साथ के इंडियन पीपल कोड (आईपीसी), काड ऑफ क्रिमिनल प्रासिंजर (सीआरपीसी) और एविडेंस एक्ट की जगह ले रहे हैं। इन बिलों को को स्कूटी के लिए संसदीय वैनान के पास भेजा जाएगा। यहांसंनी अमित शाह ने इन बिलों को पेश करते हुए कहा, 'पुराने कानूनों आईपीसी-सीआरपीसी और एविडेंस एक्ट' का फोकस ब्रिटिश प्रशासन को मजबूत बनाना और उसकी सुरक्षा करना था। इनके जरिए लोगों को

इसी में नियुक्ति प्रक्रिया पर विवाद

कांग्रेस ने 11 साल पहले आडवाणी का लिखा पत्र साझा किया

नई दिल्ली, 11 अगस्त (एजेंसियां)। देश के मुख्य पैनल यात्रा को जीवनी चाहिए, जिसमें चुनाव आयुक (सीईसी) की नियुक्ति प्रक्रिया में सुप्रीम प्रधानमंत्री, भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजीआई) की भूमिका सदनों में विवेष के नेता और कानून मंत्री शामिल हों। खत्म करने की विपक्ष लगातार आलाचना कर रहा आडवाणी ने दो जून, 2012 को पत्र में लिखा था कि, 'इस बीच, कांग्रेस महासचिव जयपाल रमेश ने शुक्रवार को तकालीन भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष के बिना एक ट्रूक द्वारा नियुक्त लाल कृष्ण आडवाणी द्वारा प्रधानमंत्री ममोहां द्वारा नियुक्त हो दिया गया। इस पत्र को साझा किया, जिसमें ऐसी इस पत्र उत्तम समय सरकार सभी राजनीतिक दलों की नियुक्तियों के लिए व्यापक आधार वाले कोलेजियम का राय लेने के लिए तैयार थी। मनमोहन सिंह ने कहा था कि वह चुनाव सुधारों के तहत चुनाव आयोगों की सीईसी और अन्य सदस्यों की नियुक्ति पांच सदस्यीय नियुक्ति में बदलाव के लिए तैयार हैं।' >14

अधीर रंजन के निलंबन पर विपक्ष का मार्च लोकसभा से विपक्ष का वॉकआउट; राज्यसभा से राघव चड्ढा स्पेंड, संजय सिंह का निलंबन बढ़ाया



नई दिल्ली, 11 अगस्त (एजेंसियां)। मानसून सत्र के आखिरी दिन शुक्रवार को संसद में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष अधीर रंजन के संर्वेशन के विपक्ष में दोनों सदनों में विपक्ष के नेताओं ने हांगामा किया। इंडिया के सासदों ने लोकसभा की कार्यवाही का बहिष्कार करने का फैसला लिया।

बाद में सदन की कार्यवाही को लिए स्थिरित कर दिया गया। इसके बाद दूष्ट बजे विपक्षी सासदों ने संसद परिसर में नामनिकाला। इस प्रदर्शन में सोनिया गांधी, राहुल गांधी और राज्यसभा में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष अधीर रंजन चौधरी की साथी विपक्षी सासद शामिल हुए। उथर, राज्यसभा में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष अधीर रंजन चौधरी के संर्वेशन का मुदा उठा।

इधर, राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने अप सांसद राघव चड्ढा को निलंबित कर दिया गया। सांसद संजय सिंह का निलंबन भी बढ़ा दिया गया। इस प्रदर्शन में नेता प्रतिपक्ष धनखड़ के बाद नेता प्रतिपक्ष मलिकार्जुन खड़ों ने दोनों सांसद विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट आंतरिक तक निलंबित रहे। राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष धनखड़ के बाद नेता प्रतिपक्ष मलिकार्जुन खड़ों ने दोनों सांसद विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट आंतरिक तक निलंबित रहे।

खड़ों ने सभापति से कहा 'पता नहीं कि दोबारा मलिकार्जुन खड़ों के बाद नेता प्रतिपक्ष धनखड़ के बाद क्या करना चाहिए।' जब नेता प्रतिपक्ष धनखड़ के बाद नेता प्रतिपक्ष मलिकार्जुन खड़ों ने दोनों सांसद विशेषाधिकार कार्यालय का द्वितीय कार्यालय की थी। मास्टर पर जिसका किशन किला और भैरव नाम है।

इससे पहले दिल्ली उच्च न्यायालय ने इन पार्टीयों द्वारा सोशैल नाम इंडिया के उपयोग के खिलाफ एक जनहित वाचिका में केंद्र, भारत के चुनाव आयोग और नाम (अनुचित उपयोग की रोकथाम) अधिनियम, 1950 के प्रावधानों का उल्लंघन है।

मामला क्या है?

सामाजिक कार्यकार्ता गिरीश भारद्वाज ने इंडिया नाम का उपयोग कर गठबंधन के गठन के खिलाफ कार्यवाही करने की थी। वाचिका में पार्टीयों को साक्षित नाम का उपयोग करने से रोकने और केंद्र और चुनाव आयोग को उनसार, इससे आम लोगों के मन में ग्रम पैदा हो गया कि 2024 का आम चुनाव राजनीतिक दलों के बीच, गठबंधन या यहांई को ईमीआई को पत्र भेजा था, तोकिन पैनल ने कोई कार्यवाही नहीं की।

सामाजिक कार्यकार्ता गिरीश भारद्वाज ने इंडिया नाम का उपयोग करने से रोकने और केंद्र और चुनाव आयोग को उनसार, इससे आम लोगों के मन में ग्रम पैदा हो गया कि 2024 का आम चुनाव राजनीतिक दलों के बीच, गठबंधन या यहांई को ईमीआई को पत्र भेजा था, तोकिन पैनल ने कोई कार्यवाही नहीं की।

सामाजिक कार्यकार्ता गिरीश भारद्वाज ने इंडिया नाम का उपयोग करने से रोकने और केंद्र और चुनाव आयोग को उनसार, इससे आम लोगों के मन में ग्रम पैदा हो गया कि 2024 का आम चुनाव राजनीतिक दलों के बीच, गठबंधन या यहांई को ईमीआई को पत्र भेजा था, तोकिन पैनल ने कोई कार्यवाही नहीं की।

सामाजिक कार्यकार्ता गिरीश भारद्वाज ने इंडिया नाम का उपयोग करने से रोकने और केंद्र और चुनाव आयोग को उनसार, इससे आम लोगों के मन में ग्रम पैदा हो गया कि 2024 का आम चुनाव राजनीतिक दलों के बीच, गठबंधन या यहांई को ईमीआई को पत्र भेजा था, तोकिन पैनल ने कोई कार्यवाही नहीं की।

सामाजिक कार्यकार्ता गिरीश भारद्वाज ने इंडिया नाम का उपयोग करने से रोकने और केंद्र और चुनाव आयोग को उनसार, इससे आम लोगों के मन में ग्रम पैदा हो गया कि 2024 का आम चुनाव राजनीतिक दलों के बीच, गठबंधन या यहांई को ईमीआई को पत्र भेजा था, तोकिन पैनल ने कोई कार्यवाही नहीं की।

सामाजिक कार्यकार्ता गिरीश भारद्वाज ने इंडिया नाम का उपयोग करने से रोकने और केंद्र और चुनाव आयोग को उनसार, इससे आम लोगों के मन में ग्रम पैदा हो गया कि 2024 का आम चुनाव राजनीतिक दलों के बीच, गठबंधन या यहांई को ईमीआई को पत्र भेजा था, तोकिन पैनल ने कोई कार्यवाही नहीं की।

सामाजिक कार्यकार्ता गिरीश भारद्वाज ने इंडिया नाम का उपयोग करने से रोकने और केंद्र और चुनाव आयोग को उनसार, इससे आम लोगों के मन में ग्रम पैदा हो गया कि 2024 का आम चुनाव राजनीतिक दलों के बीच, गठबंधन या यहांई को ईमीआई को पत्र भेजा था, तोकिन पैनल ने कोई कार्यवाही नहीं की।

सामाजिक कार्यकार्ता गिरीश भारद्वाज ने इंडिया नाम का उपयोग करने से रोकने और केंद्र और चुनाव आयोग को उनसार, इससे आम लोगों के मन में ग्रम पैदा हो गया कि 2024 का आम चुनाव राजनीतिक दलों के बीच, गठबंधन या यहांई को ईमीआई को पत्र भेजा था, तोकिन पैनल ने कोई कार्यवाही नहीं की।

सामाजिक कार्यकार्ता गिरीश भारद्वाज ने इंडिया नाम का उपयोग करने से रोकने और केंद्र और चुनाव आयोग को उनसार, इससे आम लोगों के मन में ग्रम पैदा हो गया कि 2024 का आम चुनाव राजनीतिक दलों के बीच, गठबंधन या यहांई को ईमीआई को पत्र भेजा था, तोकिन पैनल ने कोई कार्यवाही नहीं की।

सामाजिक कार्यकार्ता गिरीश भारद्वाज ने इंडिया नाम का उपयोग करने से रोकने और केंद्र और चुनाव आयोग को उनसार, इससे आम लोगों के मन में ग्रम पैदा हो गया कि 2024 का आम चुनाव राजनीतिक दलों के बीच, गठबंधन या यहांई को ईमीआई को पत्र भेजा था, तोकिन पैनल ने कोई कार्यवाही नहीं की।

सामाजिक कार्यकार्ता गिरीश भारद्वाज ने इंडिया नाम का उपयोग करने से रोकने और केंद्र और चुनाव आयोग को उनसार, इससे आम लोगों के मन में ग्रम पैदा हो गया कि 2024 का आम चुनाव राजनीतिक दलों के बीच, गठबंधन या यहांई को ईमीआई को पत्र भेजा था, तोकिन पैनल ने कोई कार्यवाही नहीं की।

सामाजिक कार्यकार्ता गिरीश भारद्वाज ने इंडिया नाम का उपयोग करने से रोकने और केंद्र और चुनाव आयोग को उनसार, इससे आम लोगों के मन में ग्रम पैदा हो गया कि 2024 का आम चुनाव राजनीतिक दलों के बीच, गठबंधन या यहांई को ईमीआई को पत्र भेजा था, तोक

इमरान के बिना चुनाव

जेसों को अपेक्षा थी उसक अनुसार हा पाकिस्तान का असेंबली का निर्धारित अवधि बीतने से तीन दिन पहले ही औपचारिक रूप से भंग कर दिया गया है। आम चुनाव होने तक देश चलाने के लिए एक कार्यवाहक प्रधानमंत्री को नियुक्त करने का प्रयास चल रहा है। ऐसे में पाकिस्तान के संविधान के अनुसार संसद भंग करने के अलावा कोई रास्ता बचा नहीं था। अब वहां 90 दिनों के भीतर आम चुनाव कराने की प्रक्रिया प्रारंभ होने वाली है। नेशनल असेंबली को भंग करने के पाइछे पाकिस्तान सरकार का एक सोचा समझा व सुविचारित फैसला माना जा रहा है। इसलिए असेंबली का कार्यकाल पूरा होने से तीन दिन पहले इसे भंग किया गया है। अब नियमानुसार अगला चुनाव कराने के लिए 30 दिनों का अतिरिक्त समय मिल सकता है। फिर भी जानकारों ने आशंका व्यक्त की है कि इस बार इस समय सीमा के भीतर चुनाव शायद ही हो पाएं। वजह है कि जनगणना के ताजा आंकड़े औपचारिक तौर पर मंजूर कर लिए गए हैं। यानी अब यह संवैधानिक जरूरत हो गई है कि जनगणना के नए आंकड़ों के मुताबिक डीलिमिटेशन का काम पूरा करके ही चुनाव करवाए जाएं। चुनाव आयोग को इसके लिए कम से कम दो महीने का अतिरिक्त समय चाहिए। जाहिर है नेशनल असेंबली भंग होने के बाद प्रधानमंत्री राहबाज शरीफ को नई व्यवस्था होने तक पदभार संभाले रहने को कहा जाएगा, फिर भी अब सबकी नज़रें इस बात पर टिकी हैं कि कार्यवाहक प्रधानमंत्री की जिम्मेदारी किसे मिलती है। इस बार केयरटेकर पीएम पर सामान्य से ज्यादा जिम्मेदारी होगी जिसकी कई घटनाएँ बजेहैं। सबसे पहली बात तो यही है ए चुनाव कराने और निर्वाचित सरकार के कार्यभार संभालने में कोई ज्यादा देरी नहीं हुई है। इसलिए नई सरकार के गठन में करीब छह महीने लग ही जाएंगे। दूसरी सबसे बड़ी बात यह है कि पाकिस्तान अपनी अभूतपूर्व आर्थिक संकट से गुजर रहा है। यहां तक कि लोगों को एक जून की रोटी भी उपलब्ध कराने में कड़ी मशक्कत करनी पड़ रही है। जाहिर है ऐसे में केयरटेकर सरकार के मुखिया को अलोकप्रिय होते देर नहीं लगेगी। जब यह साफ़ है कि उसे जनता उताकर भी कह कर्दे फैसले लेने पड़े।

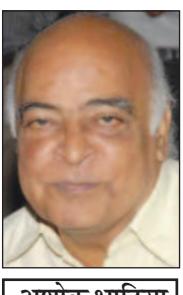
बहुत मुश्किल नहीं 5 द्विलियन का टारगेट

नरेंद्र मोदी ने हाल ही में कहा था कि वह इस बात को पक्का करेंगे कि उनके तीसरे कार्यकाल में ईंडिया की इकॉनमी 5 ट्रिलियन डॉलर की हो जाए और दुनिया में तीसरे नंबर पर पहुंच जाए। अभी वहले नंबर पर अपेक्षा, दूसरे पर बीचन, तीसरे पर जापान और चौथे पर जर्मनी हैं। जीडीपी लिहाज से भारत की अर्थव्यवस्था पांचवें नंबर पर है। पीएम ने जो कहा है, वैसा होना खास मुश्किल नहीं है। आइए दिखेते हैं कि ऐसा होना क्यों आसान बताया जा रहा है और इसका केसा असर दिखेगा। स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक की एक रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि अब से लेकर साल 2030 तक ईंडिया की नॉमिनल जीडीपी ग्रोथ 10 पर्सेंट सालाना हो रही है। इस रफ्तार से 2030 तक भारत का जीडीपी 5 नहीं, बल्कि 6 ट्रिलियन डॉलर हो जाएगा। अभी भारत का जीडीपी साढ़े 3 ट्रिलियन डॉलर के आम्पाए है।

दूसरे देशों से भारत का जो ज्यापार है, उसका सबसे ज्यादा प्रोग्राम होगा जीडीपी बढ़ाने में। नाइनैशल ईयर 2023 में एक्स्टर्नल डेट 1.2 ट्रिलियन डॉलर का था। यह साल 2030 तक बढ़कर 2.1 ट्रिलियन डॉलर हो सकता है। इसके बाद ग्रोथ में प्रोग्राम होगा देश के भीतर होने वाली खरीद-फरोख्त का। स्टैंडर्ड वार्टर्ट की रिपोर्ट कहती है कि काइनैशल ईयर 2021 में इस काइउसहोल्ड कंजम्प्शन का साइज 2.1 ट्रिलियन डॉलर का था, लेकिन वित्त वर्ष 2030 तक यह बढ़कर 3.4 ट्रिलियन डॉलर हो जाएगा। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि वित्त वर्ष 2023 में भारत में प्रति व्यक्ति आमदनी 2450 डॉलर थी, लेकिन काइनैशल ईयर 2030 तक यह लगभग 70 प्रतिशत बढ़ जाएगी। तब इंडिया की प्रति व्यक्ति आय 4000 डॉलर हो जाएगी। इस तरह इंडिया मिडल इनकम इकॉनमी बन जाएगा।

बना रहा, तो साल 2030 तक भारत की ऐवरेज जीडीपी ग्रोथ 6.2 प्रतिशत तक ही रह जाने का खतरा है। यह 2019 तक के 10 वर्षों में दिखी ऐवरेज ग्रोथ से कम होगी। उस दौरान औसत जीडीपी ग्रोथ 7.1 प्रतिशत थी। यही नहीं, 2030 के बाद साल 2050 तक जीडीपी ग्रोथ घटकर 4 प्रतिशत तक जा एनएनजी रिसर्च के अर्थशास्त्री कुछ चुनौतियों का जिक्र करते हैं। भारत की लेबर फोर्स पार्टिसेपेशन रेट घट रही है। यानी लेबर फोर्स में 15 से 64 साल की कामकाजी उम्र वाले लोगों की हिस्सेदारी कम हो रही है। खासतौर से महिलाओं की।

वर्ल्ड बैंक का कहना है कि साल 2000 में भारत का एलएफीआर 60 प्रतिशत था, जो अब घटकर 53 प्रतिशत के आसपास आ गया है। भारत की वर्कफोर्स पढ़ाई-लिखाई के मामले में भी काफी पीछे है। बालिग कामकाजी लोग मुश्किल से 6.7 साल की औसत स्कूलिंग वाले हैं। स्कूल ईंडिया जैसे कदम ठीक हैं, लेकिन इनका दायरा और इनकी क्वॉलिटी बेहतर करनी होगी।



अशाक भाट्या

भाजपा राजस्थान में कर्नाटक वाली ग़लती नहीं दोहराएगी

राजस्थान की बोहवा को चुनावी चढ़ने के साथ ही मानवाजी और रोप-प्रत्यारोप का कांग्रेस अपने काम की तरीकी का दम भर रही थी दिल्ली से संभाल ली। मोदी ने भाजपा धार देने के लिए हाँ बीते 8 अगस्त गदों के साथ एक ने जीत का मंत्र लिया था वैठक में सभी इतर वसुंधरा राजे आण्व की मौजूदगी वाला का विषय बना है कि दिल्ली के बैठक में वसुंधरा ने द्वारा भी उत्तराधीन कमेटी को लेकर उत्साहित है। दरअसल राजस्थान में राजे की पकड़ काफी बड़े वोट बैंक पर है और वह 2 बार सूबे की मुख्यमंत्री रह चुकी है। ऐसे में राजे के अनुभव को चुनावों में साथ लेना भाजपा के लिए जरूरी है। वहीं प्रधानमंत्री मोदी द्वारा वैठक में राजे को बुलाए जाने के पांछे राजे को वेटेज देने का संदेश भी छुपा है। इधर राजे समर्थकों का काफी समय से कहना है कि वसुंधरा राजे के नेतृत्व में राजस्थान में भाजपा को सकारात्मक नतीजे मिले हैं। वहीं भाजपा खेमे में पिछले कई दिनों से गुटबाजी की चर्चाएं भी आती रही हैं जहां मुख्यमंत्री फेस को लेकर काफी माथापच्ची रही है। ऐसे मैं अब जब प्रधानमंत्री मोदी ने मोर्चा संभाल लिया है तो राजे को बैठक में बुलाकर भाजपा आलाकमान ने उनकी अनदेखी नहीं करने का संदेश दिया है।

त हुए भा बुलाया
गर फिर अटकलों
या। कई मीडिया
स्थान चुनाव को
जननीतिक अनुभव
में आप्रतित किया
काफी समय से
खरखाने बयानबाजी
मन्त्री चुनावों से
श भी देना चाहते
क में मौजूदी को
के उन्हें राजस्थान
दी जा सकती है।
एकदम नजदीक
राजे की भूमिका
पेंस बना हुआ है।
चुनाव सचालन

वस बता द कि भाजपा न कइ बार चाहा
कि वसुंधरा को राज्यपाल या केंद्र में मंत्री
पद देकर मान बढ़ाया जाए लेकिन वसुंधरा
ने राजस्थान ना छोड़ने की बात कहकर
मना कर दिया लेकिन अब जब राज्य चुनाव
की चौखट पर खड़ा है उस वक्त केंद्रीय
नेता का ये बयान वसुंधरा के गले नहीं
उत्तर। पूर्व मुख्यमंत्री ने तुंत अपनी गाड़ी
दिल्ली की तरफ मुड़वा दी और भाजपा के
राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपो नड़ा से मुलाकात करने
पहुंच गई। इस मुलाकात का उद्देश्य ये
जानना था कि आने वाले विधानसभा चुनाव
में उनकी क्या भूमिका रहेगी? करीब 1 घंटे
तक चली बैठक में वसुंधरा को आश्वासन
के साथ जयपुर रवाना कर दिया गया।
बैठक में क्या हुआ, ये पता नहीं चल सका
है लेकिन जानकारों की मानें तो राजस्थान

आने वाले विधानसभा चुनाव में सत्ता की ट जोहर ही भाजपा के लिए वसुंधरा को रकिनार करना भारी पड़ सकता है। राज्य इस साल के दिसंबर महीने में धानसभा के चुनाव होने हैं। साल 2018 हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने भाजपा से सत्ता से बाहर कर दिया था। इन चुनावों कांग्रेस ने 200 में से 100 सीटों पर जीत जीत की थी, वहाँ भाजपा 73 सीटों पर अमर गई थी। 13 सीटें निर्दलीय के खाते गई थीं तो वहाँ बीएसपी 6 सीटें जीतने कामयाब रही थीं। बहुमत से 1 सीट दूर हलोत ने सबसे पहले बीएसपी के 6 धायकों को कांग्रेस में मर्ज करवा दिया। और कुछ निर्दलीय विधायकों के समर्थन से अपनी सरकार के पांच साल पूरे करने रहे हैं। राजस्थान के राजनीतिक तेहास पर नजर डालें तो साल 1990 से ब तक किसी भी मुख्यमंत्री ने पांच साल करने के बाद वापसी नहीं की है। हर बार भाजपा और कांग्रेस एक-एक बार सत्ता रही है लेकिन इस बार मुख्यमंत्री शोक गहलोत की कुछ कल्याणकारी जनाओं ने भाजपा के लिए चुनावी खड़ी र दी है। वहाँ राज्य भाजपा में चल रही टबाजी भी उसके लिए एक बड़ा संकट नकर उभरी है। यही वजह है कि राज्य में जपा की तरफ से कौन मुख्यमंत्री का हरा रहेगा, इस पर कुछ भी क्लीयर नहीं लेकिन राजस्थान की सबसे प्रभावशाली ता और दो बार की मुख्यमंत्री रह चुकी वसुंधरा के लिए इस बार का चुनाव उनके जनीतिक कद को तय करने वाला माना रहा है। सियासी हलकों में ऐसी भी चीज़ है कि भाजपा वसुंधरा राजे पर किसी तरह से दांव लगाने को तैयार नहीं हो सकती है क्योंकि कांग्रेस पायलट लगातार पूर्व के सरकार पर भ्रष्टाचार के 3 बड़े हैं। कुछ दिनों पहले सभी वसुंधरा सरकार में हुए भ्रष्ट कार्रवाई नहीं होने को लेकर सरकार के खिलाफ मौन प्रदर्शन किया था। इस दौरे के दौरान सरकार को वसुंधरा भ्रष्टाचार के विरुद्ध कार्रवाई हालांकि वसुंधरा ने भी सभी जवाब देने में देरी नहीं कर रखी। मैं साफ कह दिया व्यक्ति को कभी राजयोग सियासी हलकों में कांग्रेस अशोक गहलोत और व बहन-भाई के रिश्ते की भी जानकारी तो ऐसा बताते हैं। मैं पर दोनों एक दूसरे की मिल होते हैं। राजस्थान में वसुंधरा जिसकी वजह से भाजपा व भी वसुंधरा की अनदेखी की नहीं उठा रहा है। इसकी ब जून को उदयपुर में देखी जब मंच पर गृह मंत्री अरजेंद्र सिंह शाठौर मंच पर थे। राठौर ने भाषण के लिए शाह का नाम पुकारा। इस से अमित शाह जिंदाबाद वे लगे लेकिन तभी शाह ने रहा हुए मंच पर उनके साथ वै का भाषण करवाने का वसुंधरा ने अमित शाह के उनसे गुजारिश की कि आप

स नेता सचिन वासी वसुंधरा राजे नारोप लगाते रहे बैचन पायलट ने अत्याचार के विरुद्ध लड़कर अपनी ही राजा। रहकर धरना बान उन्होंने कहा सरकार में हुए हैं करनी चाहिए। बैचन पायलट को देते हुए कोटा की था कि अधर्मी नहीं मिलता है। न के मुख्यमंत्री सुंधरा के बीच खासी चर्चा है। कि समय-समय दृढ़ के लिए खड़े रा का कद ही है। कोंड्रीय नेतृत्व करने का जोखिम जानगी हमने 30 थी। उदयपुर में अमित शाह और मौजूद थे। उस में नेता प्रतिपक्ष संबोधन कर रहे गृह मंत्री अमित दौरान जोर-जोर क नारे भी लगने राठौर को टोकते थीं वसुंधरा राजे इशारा किया। इस आदेश पर पहले हैं लेकिन अमित शाह ने वसुंधरा को हाथ जोड़ते हुए उन्हें पहले संबोधन करने की गुजारिश कर दी। स्थानीय सूत्र यह भी बताते हैं कि राजस्थान में भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व की राजनीति को समझना थोड़ा मुश्किल है। उन्होंने बताया कि एक तरफ अमित शाह जब उदयपुर आते हैं तो वो वसुंधरा को आगे करते दिखाई देते हैं, वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 31 मई को अजमेर में विशाल रैली कर एक तरह से राजस्थान में पार्टी के लिए चुनाव अभियान शुरू करने का विगुल बजा दिया। इस रैली में मंच पर पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे भी मौजूद थीं। इस दौरान दोनों के हाव-भाव से ये संकेत मिलते हैं कि भाजपा राजस्थान में कर्णाटक वाली गलती नहीं दोहराएगी और इसकी भरपूर संभावना है कि वसुंधरा राजे को ही आगे कर विधानसभा चुनाव के दंगल में उतरेगी। दरअसल भाजपा के लिए राजस्थान का विधानसभा चुनाव इसलिए भी बड़ी चुनौती है क्योंकि इन चुनावों के 3 महीने बाद ही लोकसभा चुनाव की घोषणा भी हो जाएगी। पिछले दो लोकसभा चुनाव से भाजपा राजस्थान की 25 में से 25 सीटों पर जीत दर्ज करने में कामयाब रही है और राजस्थान में इस बार भी पार्टी को वही प्रदर्शन दोहराना है लेकिन इस बार राजस्थान भाजपा में गुटबाजी बड़ी चुनौती बनती दिख रही है। सियासी जानकार बताते हैं कि भाजपा में मुख्यमंत्री पद के कई दावेदार हैं और सबके अपने-अपने गुट हैं। एक तरफ पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया है जो कई मौकों पर अपनी दावेदारी जता चुकी है। हालांकि ये माना जाता है कि राजेंद्र राठौर जैसे कई करीबी नेताओं के साथ छोड़ने के कारण वसुंधरा राजे सिंधिया कमजोर हो गई है।

મુદ્દાબાદ દંગો કે સચ કા સંદેશ

गी आदित्यनाथ ने दिखा कि जब कोई सन्धासी सत्ता होता है, तब क्या होता है। उद दंगों की जो फाईल वर्षों हुई थी, उसे निकाल कर जनता के सामने रख दिया होने दिखा दिया है कि एक मोह-माया से दूर होता है किसी से डरता है और न पर कोई दबाव काम करता इन दंगों की रिपोर्ट को नक करने पर उनके विशेषी नाम लगा रहे हैं कि उन्होंने नक फायदा उठाने के लिये रिपोर्ट को जनता के सामने पेश। सवाल उठता है कि जब सरकार थी तो आपने क्यों रिपोर्ट को जनता के सामने दिया? दूसरी बात यह है कि रिपोर्ट को पार्वतीनिक कानूनी

सेकुलर होने का ड्रामा करते हैं। ये सेकुलर जमात भी केवल हिन्दु समुदाय में ही पाई जाती है, जो अपने ही लोगों के खून से हाथ रंगकर अपना घर भरना चाहती है। ये जमात लोगों तक सच्चाई को कभी नहीं पहुँचने देना चाहती थी, इसलिये वो इस रिपोर्ट पर पिछले 40 सालों तक कुड़ली मारकर बैठी रही। जो सच जनता के सामने 40 पहले आ सकता था, उसको सामने लाने के लिये योगी सरकार के आने का इंतजार करना पड़ा। 13 अगस्त 1980 को मुरादाबाद की ईदगाह में साठ हजार से ज्यादा लोग इकट्ठे थे। किसी ने अफवाह फैला दी कि भीड़ में बाल्मिकी समाज ने सुअर छोड़ दिया है, जिससे लोग उत्तेजित हो गये लेकिन मामला शांत करा दिया गया। पुलिस के जाने के बाद भीड़ ने हिन्दुओं के घरों और दुकानों पर हमला कर दिया, कई लोग मारे गये और धायल हो गये। पुलिस के आने पर उस पर भी हमला किया गया और कई पुलिस अधिकारी धायल हो गये और एक अधिकारी को मार दिया गया। पीएसी पुलिस बुलाई गई तो उसने भीड़ पर अन्धाधुंध गोलीबारी की, जिसमें बड़ी संख्या में लोग मारे गये। सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस दंगे में 84 लोग मारे गये और 112 धायल हुए लेकिन जनता मानती है कि मरने वालों का आंकड़ा इससे कहीं ज्यादा था। बहुत से लोग तब से गयब हैं और आज तक उनका कुछ पता नहीं है, इसलिये उनको मरने वालों की लिस्ट में शामिल नहीं किया गया है। अब आप अंदाजा लगाईये कि उनके साथ क्या हआ होगा।

करने के लिये हाईकोर्ट के पूर्व जज नस्टिस एमपी सक्सेना की अध्यक्षता में एक न्यायिक आयोग गठन किया, जिसने तीन साल बाद 1983 में अपनी रिपोर्ट राज्य सरकार को प्रस्तुत कर दी लेकिन सरकार ने उसे ठंडे बस्ते में डाल दिया। उस रिपोर्ट कर कोई कार्यवाही नहीं की गई। उस समय राज्य में वीपी सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस सरकार थी और केन्द्र में भी इन्दिरा जी के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार थी। इन दंगों का आरोप साजपा, संघ और कुछ हिन्दु संगठनों पर लगाया गया। इन्दिरा और अंधी ने कहा कि इन लोगों ने अरब दूशों से रिश्ते खराब करने के लिये दंगा करवाया था। हिन्दु समाज और बाल्मिकी समाज पर इन दंगों को करने का आरोप लगाया गया। चुकी थी। बाद में एक संतहत इस नेता ने दो एप्रिल दर्ज करवाईं कि बाल्मिकी उन लोगों को जान से बचाया जाना चाहिए और धर्मकी दी है ताकि दंगा बाल्मिकी समाज पर आपसी जा सके। इसलिये जब इन समाज के लिये भीड़ इकट्ठी हो गयी तो यह अफवाह फैला दी गयी। बाल्मिकी समाज ने सुना दिया है कि जबकि ऐसा कुछ था। उसने दंगा करने वाले अपने आदमी बुलाये जिन्होंने बाल्मिकी समाज के लिये हिन्दुओं पर हमला कर दिया था। दंगा शुरू हो गया। रिपोर्ट में कहा गया कि इस दंगे में भाजपा, किसी भी हिन्दु संगठन का विरोध नहीं था। इस दंगे कोई भी पुलिस कर्मचारी रोकने की कोशिश नहीं की गयी।

डॉ दिलीप अग्निहोत्री

वेकरार था। इसके लिए उसने लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव का सहारा लिया। उसका आकलन था कि इससे उसका नया नाम ईंडिया भी चर्चित होगा। इस ईंडिया एकजुटा दिखाई देगी। सरकार पर दबाव बनेगा। जनता में संदेश जाएगा। विपक्षी ईंडिया का विकल्प के रूप में विकास होगा। लेकिन अविश्वास के इस अस्त्र का उल्टा असर हुआ। प्रधानमंत्री ने देंद्र मोदी आपदा को अवसर बनाने में माहिर है। इसी तर्ज पर उन्होंने अविश्वास को भी सत्ता पक्ष के लिए अवसर बना दिया। कुछ दिन पहले सत्ता पक्ष ने सरकार के नौ वर्ष पूरे होने पर महा जनसम्पर्क अभियान चलाया था। इसके अंतर्गत नौ वर्ष की उपलब्धियां लोगों तक पहुंचाई गई थी। अविश्वास प्रस्ताव के माध्यम से सरकार को लोकसभा में अपनी उपलब्धियों के उल्लेख का अवसर मिला। विपक्ष के समक्ष शांति के साथ इसको सुनने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। अविश्वास प्रस्ताव उसी ने दिया था। सत्ता पक्ष ने उनके सभी सवालों का जवाब दिया। ने देंद्र मोदी ने मौनसून सत्र में पारित हुए लोक कल्याणकारी विधेयकों का उल्लेख किया। विपक्ष हंगामा करता रहा। विधेयकों पर विचार नहीं किया। विपक्ष ने जनता के साथ विश्वासात् किया है। इन्हें जनता की नहीं सत्ता की भूख है। इन्होंने जनता को निराश किया है। लोक कल्याण के विधेयकों का विपक्ष ने विहिष्कार किया। लेकिन अविश्वास प्रस्ताव पर सभी आ गए, मतलब साफ है। इन्हें केवल राजनीति और सत्ता से मतलब है। देश नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रहा है। देश का इस सरकार में विश्वास है। 2024 में जनता फिर एनडीए को पहले से अधिक समर्थन प्रदान करेगा। देश विकसित हो रहा है। संकल्पों को सिद्ध करने का प्रयास चल रहा है। तीस साल के बाद पूर्ण बहुमत की सरकार बनी। सरकार जन आकंक्षा को पूरा कर रही है। यह घोटालों से रहित सरकार है। भारत की बिंगड़ी हुई को सुधारा गया। संभाला गया। दुनिया में भारत का महत्व बढ़ा है। विपक्ष ने अविश्वास प्रस्ताव के माध्यम से जनता के विश्वास कम करने का प्रयास किया। लेकिन उनका मंसूबा पूरा नहीं होगा। नौ साल में करीब चौदह करोड़ लोग गरीबी रेखा के ऊपर आए हैं। आईएमएफ ने कहा कि भारत में अति गरीबी का निवारण हुआ है। स्वच्छ भारत अभियान से चार लाख से अधिक लोगों का जीवन बचाना सम्भव हुआ। भारत की उपलब्धियों पर विपक्ष का अविश्वास है। विपक्ष जनता के विश्वास को देखने में असमर्थ है। सत्ता पक्ष ने अपनी उपलब्धियों गिना कर उनके समक्ष चुनावी भी पेश की। क्योंकि इसके जबाब में विपक्ष के पास कहने को कुछ नहीं था। विपक्ष के किसी भी नेता ने यूपीए के दस वर्षों का नाम नहीं लिया। मोदी सरकार उसके मुकाबले बहुत बड़ी लकीर खींच चुकी है। इसी प्रकार मणिपुर के मुद्दे पर भी विपक्ष का मंसूबा पूरा नहीं हुआ। यूपीए सरकार के घोटाले गिनाये गए, अमित शाह ने कहा बारह लाख करोड़ रुपये से अधिक के घोटाले हुए। बोफोर्स, टूजी, सत्यम, कॉमन वेल्थ, क्योला, टाटा ट्रक, नोट के बदले बोट घोटाला, आदर्श घोटाला, नेशनल हेराल्ड, वाडा का डीएलएफ, चारा घोटाला, खाद्य सुरक्षा बिल का घोटाला, गणियाबाद प्रोविडेंट फंड घोटाला, आईपीएल, एलाईसी हाउसिंग, मधु कोड़ा, सबमरीन घोटाला आदि यूपीए ने

यूपीए सरकार तेल उत्पादक देशों व कम्पनियों का कई लाख करोड़ रुपये का कर्ज छोड़ गई थी। इसकी भरपाई भी वर्तमान सरकार को करनी पड़ रही है। इन नौ वर्षों में अनेक संवेदनशील समस्याओं का समाधान हुआ। यह सभी नरेंद्र मोदी सरकार के कारण ही संभव हुआ। अनुच्छेद- 370 और 35ए का विरोध करना भी साम्रादिकता माना जाता था। ऐसाकाल विजये के द्वारा उत्तराखण्डी पार्टीजों ने सार्वतंत्र चक्री

सम्भवुलर दिखने के लिए इन अलगावावादा प्रावचनों का समर्थन जरूरी था। इसके हटने पर गम्भीर परिणाम की चेतावनी तक दी गई। लेकिन नरेंद्र मोदी सरकार ने इसको हटा कर ही दम लिया। देश में आजादी के सात दशक बाद एक विधान एक निशान लागू हुआ।

सरकार का प्रत्येक निर्णय लोक कल्याण व राष्ट्रीय हित के अनुरूप है। प्रधानमंत्री मोदी ने दशकों से लंबित फैसलों को लागू किया। काँसेना के बाद अर्थव्यवस्था को फिर से पटरी पर लाना दुनिया के सामने सबसे बड़ी चुनौती बन गई है। मगर भारत की अर्थव्यवस्था अब भी विकास की राह पर है। बीस लाख करोड़ रुपये के आत्मनिर्भार भारत पैकेज के सहारे भारत ने दिल्ली पारा लगाया है। उसी परिस्थिति में देश अपनी अपर्याप्ति की सभी सम-

। उनकी गरिबों के लिए हो गए हैं जो के बीच नए ठीक गरिबों से मत गा भी रहने लागें। जायेंगे। म अपनी कहते हैं उन इसके कानकास यात्रा का नई गति मिला है तथा देश आत्मानभरत का रह पर बढ़ा है। आजादी के बाद सात दशकों में देश के केवल साढे तीन करोड़ यामीण घरों में ही पानी के कनेक्शन थे। लेकिन नरेंद्र मोदी के शासन में साढे चार करोड़ घरों को साफ पानी कनेक्शन दिए गए हैं। दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य योजना आयुष्मान लागू की गई। इसके दायरे में पचास करोड़ लोग हैं जो सालों में भारत ने डिजिटल लेनदेन में दुनिया को नई दिशा दिखाने का काम किया है। रिकॉर्ड सैटेलाइट प्रक्षेपित किये जा रहे हैं। रिकॉर्ड सड़कें बनाई जा रही हैं। दशकों से लंबित अनेक योजनाएं पूरी की गई हैं। अनेक पुराने विवाद भी पूरी शांति और सौहार्द से सुलझाए गए हैं। कोरोना काल में अस्सी करोड़ लोगों को निशुल्क राशन की व्यवस्था की गई। जन औपर्यंथ दवा केन्द्र की संख्या अस्सी से बढ़कर पांच हजार हो गई। करीब सवा सौ नये मेडिकल कालेज खुले हैं। यूपीए के दस वर्ष में भारतीय रेल ने मात्र चार सौ तेरह रेल रोड ब्रिज और अंडर ब्रिज का निर्माण किया। मोदी सम्राट् ने दृष्टिये तीन गति अधिक तिर्यां किया।



2

चम्मच से नहीं, जुबान से

नेता जी ! समझ में आ रहा है कि कौन से करें इस चुनाव में । हर वादों के साथ खेल-कर उबिया गए हैं । इस ब्लेना होगा । “स्क्रेटरी हमेशा उनके तलवे जुबान बाहर लटकाए सभी उपाय खोज रखा है । सोशल मीडिया पर भी-डुलती हैं । किसी अब उनकी पढ़ाई-हवाही और हाँ में हाँ जाती है । पढ़े-लिखे की के संगत में रहकर । स मामले में ?” सीधी गरीबों के साथ चुनाव का मजा रहा । चुनाव का मजा हाँ ही आता है । उनकी एगी जब देखेंगे कि उनके साथ खेलने के पहले भी खेलते थे, उन्हें वह मजा नहीं आया था, जो अब आएगा । “नेता जी ने अपनी गहरी समझ का परिचय दिया । “आप राजनीति में किस तरह अंगद पाँव की तरह जम गए हैं उसकी मिसाल आपका बेशकीमती कथन है । बस आप दो चीजें ठीक कर लें तो बड़ी कृपा होगी । एक तो अपने मुँह से खुद को खूब गरिया लें और दूसरा अपने विरोधी से अपने बारे में खुद भला बुग कहलवायें । जब आप खुद की तारीफ करते हैं तो लोगों को हँसी आने लगती है । इससे आपका इमेज जितना बनना चाहिए, उतना बन नहीं पाता है ।

ऐसा करने से आप सीधे चुनाव से फिसलकर खयालों में चले जाते हैं । खयालों में जीने वाले राजनीति मैं नहीं मुगेरीलाल के हसीन सपने बुनने के काम आते हैं ।” इतना सुनते नेता जी आहत हुए । उन्हें लगा कि स्क्रेटरी लाठी धुमा रहा है । बोले- “हम समझ रहे हैं कि आप क्या कहना चाहते हैं । इतना सोशल मीडिया तो हम भी समझते हैं । हम भी पढ़े हैं, हाँ यह अलग बात है कि थोड़ा-बहुत नकल किए हैं । चुनाव के बारे में जरा क्या पूछ लिया आप तो सीधे हम पर ज्ञान पेलने लगे ! हमारी पहुँच जानते हैं आप । आप की सूटिया अभी भी हमारे पास है । औकात के हिसाब

अपनी जुबान चलाया करें।“

“आपका गलत फहमा हा गया नता जा । हम तो आपके तलुवाचाटुकार हैं । हम अपनी नौकरी के उतने करीब नहीं हैं जितने कि आपके करीब हैं । अगर आप फिर से सत्ता में आ जाते हैं तो हमें ऐसी कौन सी खुशी है जो नहीं मिलेगी । आपके रास्तों की बाधाओं को देखना और हटाना हमारा काम है । इसी भावना से कहा, बाकी आपकी मर्जी है । वरना हम तो चुनाव जितने के तरीकों के बारे में सुझा रहे थे आपने ही दिशा बदल दी ।”
सेक्टरी ने मर्फाई दी ।

“हाँ इस बार सीधे गरीब से खेलेंगे। उनकी जिंदगी सस्ती जो होती है। लेकिन गरीबों के साथ खेलकर हम भी कहीं गरीब हो गए तो...कीड़े-मकौड़े से जीने वाले लोगों के बीच में जाना क्या हमारे स्टेटस के लिए ठीक रहेगा?” “बात ठीक कहते हैं... गरीबों से मत खिलाइ।” “उनके यहाँ जाने की योजना भी रहने देते हैं।” “यह भी सही कहा। क्यों न लोगों को लड़ा दें, इससे वे लड़ने में व्यस्त हो जायेंगे। इससे जो आग निकलेगी उस पर हम अपनी चुनावी रेटियाँ सेक सकेंगे। क्या कहते हैं आप?” “उपाय तो अच्छा है, लेकिन इसके लाभ क्या होंगे?”



अभी सावन महीने का अधिक मास चल रहा है। सावन और अधिक मास का योग 19 साल बाद आया है। 16 अगस्त को अधिक मास खत्म होगा और 17 से सावन शुक्ल पक्ष शुरू होगा, जो कि 31 अगस्त की सुहूल तक रहेगा। सावन में शिव जी के 12 ज्योतिलिंगों में दर्शन-पूजन करने की परंपरा है। अगर इन मंदिरों में दर्शन पूजन करने नहीं जा पाते हैं तो उनमें आसपास के किसी भी पौराणिक मंदिर में दर्शन-पूजन कर सकते हैं। 12 ज्योतिलिंगों में पहला है सामनाथ। ये मंदिर गुजरात के वेरावल बद्रगंगा हैं से कुछ ही दूरी पर प्रभास पाटन में स्थित है। शिव महापूरण में सभी ज्योतिलिंगों के बारे बताया गया है। इस ज्योतिलिंग के संबंध में मान्यता है कि सोमनाथ के शिवलिंग की स्थापना

खुद चंद्रमा ने की थी। जानिए शिव जी के पहले ज्योतिलिंग सोमनाथ से जुड़ी खास बातें... चंद्र देव ने स्थापित किया सोमनाथ शिवलिंग चंद्र और दक्ष प्रजापति से जुड़ी कथा है। दक्ष प्रजापति ने अपनी 27 पूरियों का विवाह चंद्र देव से किया था। दक्ष की सभी पूरियों में रोहिणी सबसे सुदर्शनी। इसी वजह से चंद्र रोहिणी से अधिक प्रेम करते थे और बाकी पत्नियों पर ध्यान नहीं देते थे। इस कारण दक्ष की शेष 26 पूरियों को रोहिणी से जलन होने लगी। इन 26 पूरियों ने ये बात अपने पिता प्रजापति दक्ष से कह दी। दक्ष ये सुनकर दक्ष के बासर करके अराहोने का असर करके अराहोने का असर करके अराहोने का धीरे-धीरे शीण होने वाली खत्म होता है और शुक्ल पक्ष में चंद्र कृष्ण पक्ष में शीण यानी खत्म होता है और शुक्ल पक्ष में चंद्र बहुत लगता है। पूरियाँ कौन पूर्ण रूप हो जाती हैं।

चंद्र देव ने दक्ष के शाप का असर खत्म करने के लिए ब्रह्माजी से मदद मांगी। तब ब्रह्माजी ने चंद्र को सलाह दी कि उन्हें प्रभास क्षेत्र (सोमनाथ का क्षेत्र) में शिव जी को प्रसन्न करने के लिए तात्पुरता करो। शिव जी को कृपा से तुक्कारी समव्याएं दूर हो जाएंगी। ब्रह्माजी की बात मानकर चंद्र ने प्रभाष क्षेत्र में शिवलिंग स्थापित किया और तपस्या शुरू कर दी। चंद्र के कठोर तप से प्रसन्न होकर शिव जी प्रकट हुए और दक्ष के शाप का असर करके अराहोने का असर करके अराहोने का धीरे-धीरे शीण होने वाली खत्म होता है और शुक्ल पक्ष में चंद्र बहुत लगता है।

चंद्र देव ने शिव जी से प्रार्थना की थी कि वे प्रभाष क्षेत्र में ही वास करें। चंद्र देव की प्रार्थना मानकर भगवान ज्योति स्वरूप में प्रभाष क्षेत्र में विवाजित हो गए। यहां चंद्र देव ने शिवलिंग स्थापित किया था, इसी वजह से इस शिवलिंग का नाम सोमनाथ पड़ा है। ऐसे पहुंच सकते हैं सोमनाथ सोमनाथ का करोनी एपरोपोर्ट 63 किमी दूर दीव है। यहां तक हवाई मार्ग से पहुंच सकते हैं। इसके बाद रेल या बस की मदद से सोमनाथ पहुंच जा सकता है। इसके अलावा सोमनाथ के लिए देश के सभी बड़े शहरों से ट्रेने आसानी से मिल जाती है। सोमनाथ सड़क मार्ग से सभी बड़े शहरों से जड़ा है निजी गाड़ियों से भी सोमनाथ आसानी से पहुंच सकते हैं।

पुरुषोत्तम महीने की एकादशी आज

इस तिथि पर व्रत के साथ ही सूर्य और पीपल पूजन करने से तृप्त हो जाते हैं पितर

अधिक मास में भगवान विष्णु की पूजा आराधना के साथ ही पितरों की भी पूजा करने का विधान है। पुण्यों के मुताबिक अधिक मास की एकादशी पर किया गया श्राद्ध और दान पितरों को संतुष्ट कर देता है।

पितरों को संतुष्ट करने के लिए अधिक मास के कृष्ण पक्ष की भी महत्वपूर्ण माना गया है। इस दोरात्र एकादशी पर सूर्य को अर्च्य देने और पीपल की पूजा करने से भी पितर तृप्त हो जाते हैं। इस बात का जिक्र ग्रंथों में भी किया गया है।



सूर्य पूजा: पुरुषोत्तम महीने में सूर्य को दिया गया अर्च्य पितरों को तृप्त करता है। सूर्य, भगवान विष्णु का ही अंश है। इसलिए इन्हे सूर्य नारायण कहा गया है। ये ही प्रत्यक्ष देवता हैं। इसलिए परम एकादशी पर उगते हुए सूरज को जल चढ़ाने के बाद पितरों की तृप्ति के लिए प्रार्थना करना चाहिए। ऐसा करने से पितर संतुष्ट होते हैं।

पीपल पूजा: इस पवित्र महीने की एकादशी पर पीपल की पूजा का भी खास महत्व है। इस दिन सुबह जलदी उठकर पानी में गंगाजल, कच्छ और तिल मिलाकर पीपल को चढ़ाना चाहिए। ऐसा करने से पितृ तृप्त हो जाते हैं। साथ ही भगवान विष्णु की कृपा मिलती है।

ऐसे करें पितरों के लिए विशेष पूजा एकादशी तिथि पर श्राद्ध और तपाण करने का विधान ग्रंथों में बताया गया है। इसके लिए एक लोटे में जल भरें, जल में फूल और तिल मिलाएं। इसके बाद ये जल पितरों को अर्पित करें। जल अर्पित करने के लिए जल हथेली में लेकर अंगूठे की ओर से चढ़ाएं। कंडा जलाकर उस पर गुड़-धीरा डालकर धूप अर्पित करें। पितरों का ध्यान करें।

वायु रूप में आते हैं पितर
मान जाता है कि पितर स्वयं लोक, यम लोक, पितृ लोक, देव लोक, चंद्र लोक और अन्य लोकों से सूक्ष्म वायु शरीर धारण कर धूप अर्पित करें। वे देखते हैं कि उनका श्राद्ध प्रेम से किया जा रहा है या नहीं। अच्छे कर्म दिखने पर पितृ अपने बांजों पर कृपा करते हैं।

पितरों के नाम से तपाण, पूजा, ब्रह्मभोज व दान करना पुण्यकारी होता है। इसलिए पितरों को प्रसन्न करने के लिए तपाण किया जाता है और इन दिनों में दान और ब्रह्म भोज भी कराया जाता है।

आज करें ये काम, हनुमान जी के साथ महादेव भी होंगे प्रसन्न

सावन में महादेव को प्रसन्न करना होते हैं मंगलवार को बजरंगबली की पूजा अवश्य करें। हनुमान जी को भगवान महादेव का ही एक अवतार माना गया है। महादेव की भाँति वे भी अपने भक्तों की हर मुराद पूरी करते हैं। यदि उनको प्रसन्न करना हो और साथ ही शिव जी का आशीर्वाद पाना है तो सावन के महीने में हनुमान पूजन अवश्य करना चाहिए। सावन में मंगलवार के दिन चोला चढ़ाने से हनुमान जी प्रसन्न होते हैं।

ऐसे करें:-

- बजरंगबली जी को चोला चढ़ाने के लिए चमेली के तेल का एक दीपक

- चमेली के तेल का एक दीपक



भी बजरंगबली जी के सामने जला कर रख दें। दीपक में भी चमेली के तेल का ही इत्येतता करें।

- अब एक साबूत पान का पाना लें तथा इस पर थोड़ा गुड़ च चना रख कर बजरंगबली की ओर भेज लगाएं।

वर्षों की जाती है शिव के लिंग रूप की पूजा?

- भगव लगाने के बाद उसी स्थान पर थोड़ी देर बैठकर तुलसी की माला से 5 माला इस मंत्र का जप करें: राम रामेति रामेति रमे रमे मनोरमे। सहस्र नाम तनुन्यं राम नाम वरानने॥ वही यह पूजन करने के बाद बजरंगबली को चढ़ाव गई गुड़ गुलाब के फूलों की माला से एक पूल तोड़ कर उसे एक लाल काढ़े में लपेटकर अपने धन धन स्थान यानी तिजोरी में रखें। इस उपाय से अपाको कभी आर्थिक परेशानी नहीं होगी।

किस तरह सतयुग में हुए यज्ञों से हुआ दुनिया का कल्याण

प्राचीन भारतीय इतिहास के क्षेत्र में, यज्ञ की अवधारणा अत्यधिक महत्व रखती है। यज्ञ, एक वैदिक अनुष्ठान जिसमें अर्थन को आहूति देना शामिल है, हिंदू परंपराओं में गहराई से निहित है।

ऐसा ही एक उल्लेखनीय यज्ञ जो सामने आया है वह है सतयुग का महान यज्ञ, एक ऐसा यज्ञ जिसे धर्मिकता का स्वर्ण युग माना जाता है। यह लेख यज्ञ के विवरण और दुनिया के कल्याण पर इसके प्रभाव के बारे में गहराई से बताता है।

सतयुग को समझना: स्वर्ण युग

सतयुग, जिसे सत्य यज्ञ के रूप में भी जाना जाता है, हिंदू धर्म में चार युगों या लौकिक युगों में से पहले दिव्य रही थी, पानी पीने लायक नहीं था। आनंद गंदा पानी में देखा किए गए अनुष्ठान के बारे तब गंदा है, पानी पीने लायक नहीं है। यह एक ऐसा समय है जो आनंद गंदा पानी में देखा किए गए अनुष्ठान के बारे तब गंदा है, पानी पीने लायक नहीं है। यह एक ऐसा समय है जो आनंद गंदा पानी में देखा किए गए अनुष्ठान के बारे तब गंदा है, पानी पीने लायक नहीं है।

सतयुग को परिभासा

सतयुग को आध्यात्मिक ज्ञान और दिव्य संबंध की

अवधि के रूप में माना जाता है। इस उप्र के दोरान, लोग अपने भीती के प्रति गहराई से जुड़े होते हैं, जिससे वे अधिक दयालु, निःवासी और गुणी हो जाते हैं।

सतयुग का महान यज्ञ

मानवता और प्रकृति को एकत्रुत करना सतयुग का महान यज्ञ, एक सामाजिकीय घटना थी जिसका उद्देश्य प्राकृतिक दुनिया के साथ मानवता को सुसंगत बनाना था। इस यज्ञ ने पर्यावरण का सम्मान और पोषण करने, संतुलन और सह-अस्तित्व की भावना को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया। ब्रह्मांडीय व्यवस्था की बहाली

इसके मूल में, सतयुग के यज्ञ ने दिव्य सिद्धांतों के साथ मानवीय कार्यों को संरेखित करते हुए ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बढ़ावा देने क



स्वतंत्र वार्ता, हैदराबाद

शनिवार, 12 अगस्त, 2023 9

39 साल पहले शुरू हुआ था एशिया कप भारत के नाम सबसे ज्यादा खिताब

एशिया कप के 16वें सीजन का आगाज 30 अगस्त से होने वाला है। पाकिस्तान की मेजबानी में इस बार टूर्नामेंट का आयोजन होगा। बीसीसीआई द्वारा पाकिस्तान टीम नहीं भेजने के फैसले के बाद नौ मैचों को श्रीलंका में शिफ्ट किया गया। इस बार कुल 13 मैच होने हैं। इसका मतलब है कि मेजबान देश की जमीन पर सिर्फ चार मैच ही खेल जाएंगे। एशिया कप का आयोजन पहली बार 1984 में हुआ था। अब तक इसके 15 संस्करण आयोजित हो चुके हैं, लेकिन उनमें ही चैपियन बनी हैं।

पाकिस्तान ने पिछली बार 2008 में मेजबानी की थी। 15 साल के बाद उसकी जमीन पर एशिया कप के मैच खेले जाएंगे। पिछली बार जब पाकिस्तान ने मेजबानी की थी तब श्रीलंका ने कराची में भारत को हारकर खिताब पर कब्जा किया था। एशिया कप में अब तक चार मैच ही ऐसे आए हैं जब मेजबान टीम चैपियन बनी है। 1986 में श्रीलंका, 1990/91 में भारत, 1997 और 2004 में श्रीलंका की टीम मेजबानी करते हुए खिताब जीती थी।



टी20 फॉर्मेट में नी आयोजित हो युका है टूर्नामेंट

पांच साल के सूखे को समाप्त करेगा भारत ? टीम इंडिया कब-कब एशिया कप जीती

साल	मेजबान	विजेता	उप-विजेता
1984	यूएई	भारत	श्रीलंका
1988	बांगलादेश	भारत	श्रीलंका
1990-91	भारत	भारत	श्रीलंका
1995	यूएई	भारत	श्रीलंका
2010	श्रीलंका	भारत	श्रीलंका
2016	बांगलादेश	भारत	बांगलादेश
2018	यूएई	भारत	बांगलादेश

हर बार की विजेता टीम

साल मेजबान विजेता उप-विजेता
1984 यूएई भारत श्रीलंका
1986 श्रीलंका श्रीलंका पाकिस्तान
1988 बांगलादेश भारत श्रीलंका
1990-91 भारत भारत श्रीलंका
1995 यूएई भारत श्रीलंका
1997 श्रीलंका श्रीलंका भारत
2000 बांगलादेश पाकिस्तान श्रीलंका
2004 श्रीलंका श्रीलंका भारत
2008 श्रीलंका भारत श्रीलंका
2010 श्रीलंका भारत श्रीलंका
2012 बांगलादेश पाकिस्तान बांगलादेश
2014 बांगलादेश श्रीलंका पाकिस्तान
2016 बांगलादेश भारत बांगलादेश
2018 यूएई भारत बांगलादेश^{पाकिस्तान}
2022 यूएई श्रीलंका पाकिस्तान

अपने नाम किया। पाकिस्तान दो बार

द्वारा उठाया गया उप-विजेता रहा। इन तीनों के अलावा बांगलादेश ही एक ऐसी टीम है जो फाइनल में पहुंचने के बाद भी चैपियन नहीं बनी है। अफ ग नि रस्त 1 न, संयुक्त अरब अमीरात और हांग कान की टीमें फाइनल में नहीं पहुंच पाई हैं। नेपाल युका है तो इसके लिए तैयार रहा है।

मौका हमेशा रहता है, भले ही 1% हो अपनी वापसी पर ध्वन ने

कहा- 'मैं निश्चित रूप से तैयार रहूँगा' (वापसी के लिए)। इसलिए

मैं खुद को फिट रखूँगा हूँ (ताकि

जब भी मौका मिले मैं तैयार रहूँगा)।

बीसीसीआई ने कुछ दिन पहले

प्रतिशत हो या फिर 20 प्रतिशत।

मूझे अब भी देखिंग मैं मजा आता

है और मूले खेल में आनंद मिलता

है, ये चीजें मेरे कंट्रोल में हैं, जो

नजरअंदाज किया गया, जबकि

भी फैसला हुआ, मैं उसका

तैयार रहूँगा।

मौका हमेशा रहता है, भले ही

1% हो अपनी वापसी पर ध्वन ने

कहा- 'मैं निश्चित रूप से तैयार

रहूँगा' (वापसी के लिए)। इसलिए

मैं खुद को फिट रखूँगा हूँ (ताकि

जब भी मौका मिले मैं लगे हैं।

बीसीसीआई ने देखिंग मैं हिस्से लेने के लिए तैयार रहूँगा।

टीम का चैयर टीम का एलान किया है।

टीम के चैयर टीम की टीम

ध्वन को लेने के लिए तैयार

रहूँगा।

अर्थात् 18 घण्ठीने पहले आखिरी बन्द खेला था।

रविचंद्रन अश्विन ने 18 घण्ठीने

बन्द खेला था।

रविचंद्रन अश्विन ICC टेस्ट

बॉलस की ओरैकिंग मैं नंबर-1 बालर है।

उन्होंने भारत के लिए तीनों ही

पॉर्ट के बल्लंड कप में भी टीम

इंडिया का हिस्सा थे, लेकिन वह

बन्द खेल बल्लंड कप में 2 ही बार 2011

और 2015 में भारत से खेल सके।

उन्होंने भारत के लिए आखिरी बन्द

मैच 21 जुलाई 2022 को

साउथ अफ्रीका में उसके खिलाफ

खेला था। उन्हें टीम इंडिया की बन्द टीम में प्राथमिकता नहीं दी गई। हालांकि भारत में होने वाले बल्लंड कप को देखते हुए उन्हें रिप्पने

होता है तो वाकी टीमों का कॉन्फिडेंस

भी तैयार रहना चाहिए।

'फैसले पूरे नैयर को बल्लंड सकते हैं।'

अश्विन ने फैसले पूरे नैयर को बल्लंड कप को लेने के लिए तीनों ही

पॉर्ट के बल्लंड कप में भी टीम

इंडिया का हिस्सा थे, लेकिन वह

बन्द खेल बल्लंड कप में 2 ही बार 2011

और 2015 में भारत से खेल सके।

उन्होंने भारत के लिए आखिरी बन्द

मैच 21 जुलाई 2022 को

साउथ अफ्रीका में उसके खिलाफ

खेला था। उन्हें टीम इंडिया की बन्द टीम में प्राथमिकता नहीं दी गई। हालांकि भारत में होने वाले बल्लंड कप को देखते हुए उन्हें रिप्पने

होता है तो वाकी टीमों का कॉन्फिडेंस

भी तैयार रहना चाहिए।

'टीम पूरे नैयर को बल्लंड सकते हैं।'

अश्विन ने फैसले पूरे नैयर को बल्लंड कप को लेने के लिए तीनों ही

पॉर्ट के बल्लंड कप में भी टीम

इंडिया का हिस्सा थे, लेकिन वह

बन्द खेल बल्लंड कप में 2 ही बार 2011

और 2015 में भारत से खेल सके।

उन्होंने भारत के लिए आखिरी बन्द

मैच 21 जुलाई 2022 को

साउथ अफ्रीका में उसके खिलाफ

खेला था। उन्हें टीम इंडिया की बन्द टीम में प्राथमिकता नहीं दी गई। हालांकि भारत में होने वाले बल्लंड कप को देखते हुए उन्हें रिप्पने

होता है तो वाकी टीमों का कॉन्फिडेंस

भी तैयार रहना चाहिए।

'टीम पूरे नैयर को बल्लंड सकते हैं।'

अश्विन ने फैसले पूरे नैयर को बल्लंड कप को लेने के लिए तीनों ही

पॉर्ट के बल्लंड कप में भी टीम

इंडिया का हिस्सा थे, लेकिन वह

बन्द खेल बल्लंड कप में 2 ही बार 2011

और 2015 में भारत से खेल सके।

उन्होंने भारत के लिए आखिरी बन्द

मैच 21 जुलाई 2022 को

साउथ अफ्रीका में उसके खिलाफ

ईरान 49 हजार करोड़ के बदले छोड़ेगा 5 अमेरिकी कैदी

तेहरान, 11 अगस्त (एजेंसियां)। ईरान की कैद से अपने 5 नागरिकों को छुड़वाने के बदले अमेरिका ने एक डील की है। इसके तहत अमेरिका अपने नागरिकों के बदले साउथ कोरिया में सीज किए गए ईरान के 49 हजार करोड़ रुपए रिटार्न करेगा।

न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक इस डील के फॉर्म अमेरिका के बदले साउथ कोरिया में सीज किए गए ईरान के 49 हजार करोड़ रुपए रिटार्न करेगा।

ईरान ने गुरुवार को अपनी कुख्यात एवं जेल से अमेरिकियों को निकाल दिया है और उन्हें एक होटल में रिष्ट प्रिया दिया गया है।

ईरान में अमेरिकी-ईरान मूल के लोगों की हिरासत का मुद्दा काफी सालों से दोनों देशों के बीच विवाद की बजह बना हुआ था। ईरान में कैद किए गए अमेरिकियों के परिवार के लोग काफी समय से बाइडेन सरकार पर उन्हें छुड़वाने के लिए दबाव बना रहे थे। अलजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक जल्द ही ईरान उन्हें अमेरिका को सौंप सकता है।

कार्त के जरिए ईरान को दिए जाएंगे 49 हजार करोड़

न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक 49 हजार करोड़ रुपए सीधे ईरान को नहीं दिए जाएंगे। उन्हें कतर के सेंट्रल बैंक में

जेल से निकालकर हाउस अरेस्ट में रखे गए, कतर कराएगा फंड्स की डील



बेबुनियाद बता रहा है। ईरान के मुताबिक उसे कोर्ट से टैकर को जब्त करने के ऑर्डर मिले थे।

ईरान ने दावा किया कि अमेरिका की खाड़ी में एक टैकर उनके वेसल से टकरा गया था। इस वजह से वेसल में सवार 5 कूर्स में घायल हो गए थे, जिसके बाद उन्हें टैकर जब्त करने का आदेश मिला था।

ईरान की सकारी न्यूज एजेंसी आईआरएस के मुताबिक ईरान ने होम्यूज पास में कई सौ बैलिंग्स की है।

जो एक के बाद एक लातारा कई टायरोट पर हमला कर सकती है। होम्यूज पास वो इलाका है जहां से दुनिया का 20% तेल गुजरता है।

यहां ईरान से तानानी के बाद अमेरिका ने तानी से ईसीनिकों के बिना प्रतिवंध लगाने सुख कर दिए थे। ईरान और अमेरिका के बीच एक-दूसरे के कैटी बदलने की ये डील उस वक्त हो रही है जब दाना गल्फ के होम्यूज पास में ऑयल टैकर की आवाजाही को लेकर अमेरिका-भारत का उल्लंघन है।

ईरान के साथ परमाणु समझौता कर न्यूक्लियर कैपिसिटी बढ़ाने के उसके शोध कार्यक्रम को काफी नियंत्रित किया गया। ईरान का परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण इस्तेमाल पर जोर देने वाली अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएएन) के जरिए अंतर्राष्ट्रीय निगरानी में लाभ गया। इसके बदले परमाणु कार्यक्रम के चलते

वहां, ईरान इन आरोपों को छोड़ सकता है।

गया है जो न्यूक्लियर डील

जिसके रद्द होने से ईरान पर लगी अमेरिकी पारदियों

2015 में ईरान ने चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन, जर्मनी और अमेरिका के साथ एक परमाणु समझौता किया। ये समझौता इसलिए हुआ

सिरव कर्मी को पुलिस ने दाढ़ी रखने से रोका था

भारतीय दूतावास ने बाइडन सरकार के समने जताई नाराजगी



के अधिकारियों के समने उठाया

है। मामला बढ़ने पर न्यूयॉर्क स्टेट

पुलिस ने अधिकारियों को बदला

कर दिया।

सोशल मीडिया पर लिखे एक

पोस्ट में वेप्रिन ने लिखा कि

धार्मिक भेदभाव को दूर करने

के लिए साल 2019 में एक कानून

बनाया गया था। जिसके तहत

किसी को भी काम के दौरान

उसकी धार्मिक मान्यताओं का

पालन करने की आजादी दी गई

थी। वेप्रिन ने पुलिस विभाग के

द्वारा उन्हें बदला

दिया।

सोशल मीडिया पर लिखे एक

पोस्ट में वेप्रिन ने लिखा कि

धार्मिक भेदभाव को दूर करने

के लिए साल 2019 में एक कानून

बनाया गया था। जिसके तहत

किसी को भी काम के दौरान

उसकी धार्मिक मान्यताओं का

पालन करने की आजादी दी गई

थी। वेप्रिन ने पुलिस विभाग के

द्वारा उन्हें बदला

दिया।

कानून की अर्थव्यवस्था में आई

शिक्षण

जो बाइडन ने कहा कि चीन की

अर्थव्यवस्था को लेकर बड़ी

धार्मिक विकास पर धड़ रहा

है। वहां भारतीय राजदूत

तरनजीत सिंह संधू ने इस मामले

को बाइडन सरकार के शीर्ष स्तर

